काली आंधी एक अवलोकन

डॉ.मा.ना.गायकवाड
कै.व्यंकटराव देशमुख महाविद्यालय
बाभळगाव ता.जि.लातुर

प्रस्तावना :

कमलेश्वर का यह उपन्यास राजनितिक परिवेश पर लिखा गया बहुत चर्चित उपन्यास है। कमलेश्वर के जो अन्य उपन्यास है, जैसे 'एक सडक सत्तावन गलियाँ','डाक बंगला', 'तीसरा आदमी', 'समुद्र में खोया हुआ आदमी',तथा 'आगामी अतीत' इन सभी से अलग कथ्य लेकर आया हुआ यह उपन्यास है। कमलेश्वर की यह एक अलग विशेषता रही है कि, उनके एक उपन्यास की झालर दूसरे उपन्यास को नही होती है। एक अलग विषय की वास्तविकता दूनिया के सामने उजागर करने का प्रयास वो करते है। भारतीय स्वतंत्रता के पश्चात गणतंत्र की उत्साहवर्धक बात थी सत्ता के लिए चुनाव लडाना। चुनाव जीतकर सत्ता हासिल करना यह विषय अत्यंत प्रतिष्ठित और अस्तित्व का बनता गया है। इस सत्ता के लिए आदमी कुछ भी करने के लिए तयार होता है। चुनाव और सत्ता यह ऐसी नशा है, जो अल्कहोल की नशा से भी अधिक जहीरिली है। अल्कहोल की नशा का इलाज किया जा सकता लेकिन चुनाव और सत्ता के नशा का इलाज नही किया जा सकता। यह नशा स्वाधिनता के पश्चात अधिक तेजी से भारत में दिल्ली से लेकर गली तक फैलती गई। देश में चुनावी वातावरण और सत्ता के परिणामों का देश में जो वातावरण बनता गया इसका चित्रण 'काली आंधी' उपन्यास में प्रस्तुत किया गया है। राजनीतिक जागरण और चुनाव की योजना से संपूर्ण देश में एक नया परिवर्तन दिखाई देता है। लेकिन उसीका दूसरा रुप अंत्यत विनाशकारी साबित होता है। इस पर किसकी नजर नही जाती है। चुनाव के इसी पक्ष को लेकर उनका संबध जीवन के मूल्यों के साथ जोडकर जीवनमें होनेवाले परिणामों को इस उपन्यास में दिखाने का प्रयास किया है। जब राजनीति किसी के घर में घूसकर व्यक्ति में उतरती है तो जीवन मूल्य किस प्रकार बदल जाते है, परिवार के सदस्यो की दिशा बदल जाती है और परिवार से सुख किस प्रकार लुप्त हो जाता है। इसका मार्मिक चित्रण काली आंधी उपन्यास में मिलता है।

आधार शब्द :

स्वतंत्रता, गणतंत्र, प्रतिष्ठा, अस्तित्व, विनाशकारी, राजनीति, शीकार, पारिवारिक सदस्यो की दूरियां, पारिवारिक दायित्व, अवसरवादिता, तिकडमबाजियाँ, जातियता का आधार, रिश्तो की अहमियत।

उपन्यास की नायिका मालती है। संपूर्ण उपन्यास मालती के चरित्र पर ही निर्भर है। मालती खजुराहों के बैरिस्टर प्रतापराय की इकलौती बेटी है। प्रतापराय चाहते है कि, मालती उच्चशिक्षित होने के कारण उसे नेदरलँड भेज दिया जाए और वह सोसायटी में प्रतिष्ठित करना चाहते है। लेकिन मालती जग्गीबाबू से प्रेम करती है और उनसे शादी करना चाहती है। मालती के इस प्रेम और विवाह को इन्कार करते हुए मालती से कहते है कि, **"तुम्हे अपने कैरियर का भी ख्याल रखना चाहिए। शादी तो कभी भी कर सकती हो, पर कैरियर बनाने का वक्त आदमी के पास ज्यादा नही होता।"** [१] अपने पिता के इस विचारों को ना मानते हुए मालती जग्गीबाबू से विवाह कर लेती है। जग्गीबाबू खजुराहों में एक टूरिस्ट होटल चलाते है। पहले कुछ साल इनका संसार ठीक–ठाक चलता है। मालती और जग्गीबाबू को एक बेटी होती है, जिसका ना लिली रखते है। लिली के फूल के समान घर में महकती रहे और घर महक उठे यह

उनका उद्देश्य रहता है। कुछ दिन बाद मालती राजनीति में प्रवेश करती है। जग्गीबाबू भी उसको हौसला बढाते है। वो चाहते थे कि, मालती ने राजनीति में अपना विशिष्ठ स्थान बनाए। उन्होंने मालती के रास्ते में किसी भी प्रकार रूकावट आने नही दिया। अपने पति की प्रेरणा से वह आगे बढती गई। मालती पहला चुनाव म्युनिसिपल वार्ड कमिटी का जीन जाती है। यह उसकी पहली विजय थी। दूसरा चुनाव जिला परिषद का होता है वह भी जीत जाती है। इन चुनावो को जीतने के लिए जो छल–षडयंत्र बनाये गये थे। उसीका अवलंब कर विधानसभा का चुनाव भी जीत जाती है। विधानसभा चुनाव कुशाग्र बुध्दि और राजनीतिक दावँ–पेंच लगाना सिख जाती है। जग्गीबाबू एक स्वाभिमानी व्यक्ति है। वह अपनी पत्नि के स्वभाव के विपरित स्वभाववाले व्यक्ति है। जिसे राजनीति से लगाव है और न झुठी प्रतिष्ठा से तथा राजनीति झुठा आकर्षण उन्हे कभी रहा नही है। जग्गीबाबू सदा इससे दूर रहे। इसी वैचारिकता के कारण बेबनाव बढते ही जाते है, और मालती तथा उसके पति जग्गीबाबू के बीच दूरियां बढती जाती है। दोनों के बीच किसी भी प्रकार का समझौता नही होता। मालती को राजनीति के प्रभाव ने इस प्रकार से ग्रसित कर लिया है कि, वह सिवा राजनीति के वह किसी बात पर सोच और विचार करने के लिए तयार नही है। राजनीति का शिकार होने के पश्चात मालती अपने स्वार्थ में इतनी अंधी हो जाती है कि, वह भी भूल जाती है कि, वह एक नारी है तथा एक पत्नि और माँ के रुप में भी अपना कुछ कर्तव्य और दायित्व है। ऐसा लगता है कि, राजनीतिक मस्ति में जीवन से, मालती ने सम्बंध ही तोड दिया है। उसे अपने पति की चिंता है न अपनी बेटी की। राजनीति उसपर हावी हो जाती है।

मालती अब पूरी तरह से राजनीति में प्रतिष्ठित हो जाती है। उसे जग्गीबाबू का होटल चलाना अवमानकारक लगता है। इतनी प्रतिष्ठित मालती और उसका पति एक होटलवाला यह उसे अपमान लगता है। वह जग्गीबाबू से कहती है कि, तुम अब होटल का धंदा बंद करो क्योकि, **"इससे मेरी पब्लिक इमेज पर धब्बा लगता है।"** [०२] मालती अपने पति से समझाती है कि, राजनीति की इस दुनिया में साफ चेहरे रखने के लिए बहुत नुकसान भी उठाना पडता है और होटल का बंद होना इतनी बडी समस्या भी नही है। जग्गीबाबू अपनी पत्नि की बात सुनकर बहुत दु:खी होते है। उनकी समझ में नही आता है कि, होटल बंद करने के बाद वह क्या करेंगे ? उनके प्रश्न का उत्तर देते हुए मालती उसे कहती है कि, **"क्यों मेरे साथ मेरे काम में हाथ नही बँटा सकते ? इतने गैर लोग साथ रहकर काम करते है। कितनी चीजो को संभालना पडता है। आप दस कमेटियों के मेम्बर हो सकते है ..... गैर लोग मुझेसे फायदा उठा सकते है और आपके लिए मैं किसी लायक नही।"** [०३] जग्गीबाबू अपने मध्यमवर्गीय पारावारिक जिंदगी को छोडने को तयार नही होते। उन्हे सदैव संघर्षरत जीवन व्यतीत करने में ही आनंद आता है। न तो वे अवसरवादी है, न स्वार्थी। राजनीतिक फायदा उठाना और कमजोरों का शोषण करना उन्हे मान्य नही था। इसीलिए उन्होंनं अपनी पत्नि मालती से स्पष्ट कहता है कि, **"मैं तुम्हारा पति हुँ.....फायदा उठा सकने वाला गैर आदमी नही..... मैं तुमसे फायदा उठाऊँगा ? सोचो क्या बात कही है तुमने ? "** [०४] मालती के विचारों और रवैय्या से अहसास होता है कि, अब मालती को रिश्तों की आवश्यकता नही है। इसीलिए जग्गीबाबू अपना होटल बेच देते है। लिली पर मालती के गंदी राजनीति की परछाई ना पडे इसीलिए लिली को पचमढी में पब्लिक स्कुल में रखते है। स्वयं भोपाल जाकर गोल्डन सन होटल में मॅनेजर का काम करते है। जग्गीबाबू के नजदिकी मित्र गुरसरन है जो मालती के सेक्रेटरी है। घर के मामले में जग्गीबाबू को समझाने का प्रयास भी करते है। गुरसरन को लगता है कि, मालती और जग्गीबाबू का घर ठिक–ठाक चले, दोनो फिर से एक हो जाए, इसीके लिए गुरसरन प्रयास भी करता है तो जग्गीबाबू उसे कहते है कि, **"यार तुम्हारी यह राजनीति बडी घटिया चीज है। तुम लोग सिर्फ चीजो का बखुबी इस्तेमाल करना जानते हो।..... बाढ आयी तो उसे इस्तेमाल करो, सुखा पडे तो उसे इस्तेमाल करो..... कही कोई मर गया तो उसकी मौत को इस्तेमाल करो.....इससे**

ज्यादा घटिया बात और क्या हो सकती है कि दुखी और मुसीबतजदा इन्सानो के सपनो तक का इस्तेमाल तुमने कर लिया।" [०५] राजनीति करनेवाले लोग हर बात में स्वार्थ को देखते है, यह जग्गीबाबू का स्पष्ट कहना था। मालती विकास के नाम पर तरह–तरह के मुखौटे लगाकर राजनीति करती है। समाज को तो ऐसी दिखाती है कि, मेरा घर बहुत सुखी है और मेरे साथ है। महिलाओं को वह दिखाती है कि, उनके प्रति उसके दिल में कितनी सहानुभूति है। भारतीय संविधांन ने नारी को पुरूष के बराबर का अधिकार दिया है। नारी पुरूषों के साथ रहकर राजनीति में हिस्सा ले रही है। राजनीति में कोई भी चुनाव सहजता से जीता नही जाता। बेईमानी और तिकडमबाजियों का चुनाव में दर्शन होता है। इसी बेईमानी और तिकडबाजियाँ में पति और बेटी को भूल जाती है। भारतीय स्वतंत्रता के पश्चात राजनीति के कारण जातिवाद की जडे और भी मजबूत हो गयी। जातियता का प्रयोग राजनीति में भी किया जाना यह कोई नई बात नही है। जाति के आधार पर राजनीति खेली जाती है। यह जातियता का आधार भी मालती का भी हत्यायार बन गया है। वह भली भाँति जानती है कि, आज भी हमारे देश में जाति के नाम पर जनता को विभक्त कर और जाति के नाम पर चुनाव जीता जा सकता है। अपने क्षेत्र में बनियाँ लोगों की संख्या देखकर उनक`मत अपनी और खिंचने के लिए दीनानाथ को आगे करती है। दीनानाथ खुद एक बनिया है। सारे वोट अपनी ओर खिंचती है। यह षडयंत्र अपने कार्यकर्ताओ को समझाते हुए कहती है कि, **"चुनाव मैदान में इत्तफाक से बनियों का कोई अपना कंडीडेट नही है। लाला दीनानाथ के खडे होते ही सारे बनियाँ उनके इर्द–गिर्द जमा हो जाएंगे..... यह शर्तियाँ होगा, क्योंकि लोगों के मन में अपनी जाति के लिए लगाव होना लाजमी है। लाला दीनानाथ के खडे होते ही सब बनिये एकजुट हो जायेंगे और उनका समर्थन करेंगे..... जब सारे बनिया लाला दीनानाथ के झण्डे के नीचे जमा हो जायेंगे, उस वक्त लाला दीनानाथ चुनाव से मेरे फेवर में विड्रा करेंगे।"** [०६] इस चक्रव्युह में लाला दीनानाथ फँस जाते है। राजनीतिक दल और पार्टिया आज भी स्वार्थ के लिए एक दूसरे को बदनाम करती है, और राष्ट्रहीत तथा मानवता की धज्जियाँ उडाती है। कभी–कभी राष्ट्रहीत या जनता का हीत भी राजनीतिक पार्टियों के लडाई कारण बनता है। आपसी लडाईयाँ होकर भी स्वार्थ के लिए एक मिनिट के अंदर ये एक हो जाते है। विरोधी दल के उम्मीदवर नेता चंद्रसेन को मालुम पडता है कि, मालती ने सरकारी कोटे का राशन जमा किया है। शहर के सभी फकिरों का मोर्चा मालती के ऑफिस पर जाता है। दंगा होता है, मारपीट होती है। यह तो राजनीतिक लोगों के लिए कोई नयी बात नही है। इसीसे तो उनके हौसले बढते है। मालती के सूरक्षा के लिए उनका कार्यालय गोल्डन सन होटल मे हिला देते है। वहां उनके खिदमत के लिए होटल मॅनेजर जग्गीबाबू होता है। होटल में जब भी कभी मालती के सामने जाने की नौबत आती है, तो जग्गीबाबू उसे केवल एक ग्राहक समझकर सामने जाता है, और होटल मॅनेजर की हैसियत से पूरी–पूरी सेवा देता है।

राजनीति में जाति के नाम का उपयोग किया जाता है, वैसे ही धर्म के नाम पर भी राजनीति की जाती है। अत: धर्म के बिना राजनीति अधुरी होगी। सारे पार्टियों के नेता जानते है कि, धर्म अफू की गोली है। जिसे खिलाएंगे वह धर्म की धुन में ही रहेगा। सभी नेता धर्म का सहारा लेकर ही चुनाव में उतरते है। यह आज भी सत्य है। मालती लोकसभा चुनाव जीतने के लिए गाँवो में यज्ञ, गीता का पाठ पढाना और पूजापाठ कराती है। मालती के कार्यकर्ता कोई अवसर नही छोडते। हवन के बाद खुब प्रसाद बाँटा जाता है। धार्मिक उपक्रम को देखकर गाँववाले खुष होते है। लल्लुबाबु बहुत चतुराई से काम करते है। वे कहते है कि, **"..... वे गंगाजली में तुलसीदल डाले आचमनी किये सब को चरणामृत बाँट रहे थे और कहते जाते थे..... भगवान का चरणामृत साक्षी है.. .....हमारा साथ देना। सौंगध है रामजी की। भुलना मत।"** [०७] इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि, धर्म के नाम पर भावनिक बनाकर उनके मतों को लुटना यही उनका उद्देश्य होता है। यही लोग देहातों में अनपढ लोगो का धर्म के नाम पर बली चढाते है।

वो यह नही सोचते की उनके पीछे क्या षडयंत्र है ? उपन्यास में हिंदु–मुस्लिम के बीच सांप्रदायिकता के नाम पर घटित घटनाओं का बडा ही यथार्थ रुप चित्रित किया है। हिंदू–मुस्लिम समस्या देश की पुरानी समस्या है। जो आज तक इससे मुक्ति नही मिली। उपन्यास में गुलशेर अहमद इसका उदाहरण है। **".....उनके इर्द–गिर्द वे सब ताकते जमा हो रही है, जो बुनियादी तौर पर दम्युनल है। वे जातियों में भेद पैदा करके वोटो को हिंदू और मुसलमान वोटों में तकसीम कर देना चाहते है और चोरी–छुपे ऐलान भी कर रहे है कि, भारत में इस्लाम खतरे में है।"** [१८] कोई भी धर्म खतरे है कहने के बाद सामान्य व्यक्ति जाग उठता है। और कुछ भी करने के लिए तयार होता है। इस प्रकार के भडकिले कथन करके गुलशेर अहमद मुस्लिम वोटों के बलबुते पर चुनाव लडते है। मुस्लिम हो या हिंदू उनका एक ही मकसद होता है, किसी भी तरिके से चुनाव जीते। जहां दंगा फसाद होता है वहाँ नेता जाकर अपने–अपने तरिके से जनता की हमदर्दी लेले का प्रयास करते है। मात्र दंगे का इल्जाम एक–दूसरे पर करते है। स्वतत्रंता पूर्व काल में दंगे होते थे, लेकिन वो दंगे राष्ट्र और जनता के लिए हितकारक होते थे। आजादी मिलने पर भी भारत में साम्प्रदायिकता समाप्त नही हो पाई है। आज भी हिंदू और मुस्लिमों के दंगे जो होते जा रहे है। मालती भी दंगा ग्रस्त इलाके में हमदर्दी जताने के लिए जाती है, किन्तु अपने ही लोगों को कहलाकर पत्थरबाजी कराती है और मुस्लिमों की हमदर्दी प्राप्त करती है। चुनावों में राजनीतिक, कथकंडो तथा जाति और साप्रंदायिकता का उपयोग अपने स्वार्थी के लिए राजनीतिक लोग किस प्रकार करते है, इसका यथार्थ चित्रण इस उपन्यास में किया गया है। चुनाव में अखबारों की भूमिका भी उतनी महत्वपूर्ण होती है। अखबारों में मालती की बदनामी होती है। अलग अलग मुद्दो पर अखबार में बदनाम होती है। मालती अखबार में हुई बदनामी का मुकाबला जनता की अदालत में चतुराई से मुकदमा लडती है और सफल भी हो जाती है।

समाज में मालती एक सफल और सुखी स्त्री दिखाई देती है, पर यह सच्चाई नही है। सब कुछ होने के बावजूद भी वह भीतर से टूट चुकी है। व्यक्ति के मन शांति के लिए केवल बाहरी सफलता होना ही नही तो उसे अंतर्मन का समाधान भी चाहिए। मालती का अंतर्मन समाधानी नही है। उसके पास ना तो पति है न संतान। नारी तथा पुरूष कितनी भी सफलता के चोटी पर पंहुचे उसे संतान के बिना अधुरा माना जाता है। स्वय उसकी बेटी लिली उसे नही पहिचानती इतना दुर्भाग्य शायद ही किसी का हो। एक बार जग्गीबाबू मालती से कहता है कि, **"तुम्हे अपनी बेरफ्तार दौडती जिंदगी में सोचने को वक्त ही कहाँ मिला है। मशीने नही सोचती, मशीनों के लिए आदमी सोचता है और सफलता सिर्फ एक मशीन है। अब तुम औरत नही, एक सफलता बन गई हो। अब तुम्हारी मुक्ति और ज्यादा सफल होते जाने में है..... और कोई रास्ता नही है। यही तुम्हारा एकमात्र रास्ता है।"** [१९] मालती सफलता की मशीन बन गई थी। जिस चुनाव में उतरती है उसमें वह सफल होती है। जो बात ठान लेती है वह कर दिखाती है। मशीन के सफलता के पीछे इतनी दूर गयी है कि, सारे रिश्ते नाते पीछे गये है। वहाँ से अपना कोई दिखाई नही देता है। उपन्यास के अन्त में दिखाया है कि, मालती दिल्ली जाने के लिए और लिली के साथ जग्गीबाबू लिली को पचमढी छोडने के लिए भोपाल रेल्वे स्टेशन पर आते है। अर्थात दोनों ट्रेने अपनी–अपनी विरोध दिशाओं में जाती है।

सारांश : वर्तमान युग में राजनीतिक पद शक्ति आकर्षण का केंद्र हो गया है। उपन्यास की नायिका सत्ता और अधिकार प्राप्ति की आकांक्षा उसे अपने परिवार तक से अलग कर देती है। इस सत्ता और आकांक्षा में व्यक्ति अपने परिवार को भी भूल जाता है। चुनाव जीत एक अलग नशा होता है। राजनीति में भावनिक रिश्तों की कोई अहमियत नही होती है। अत: काली आंधी ऐसी रचना है जिस में स्वातंत्र्योंत्तर भारतीय राजनीति का वह पहलु स्पष्ट किया गया है जिसे बहुत कम रचनाकारोने चित्रित करने का प्रयास किया है। जीवन की विसगंतियों के बीच तालमेल बिठाने का

कमलेश्वर का प्रयास, इस उपन्यास में उभरकर आया है। प्रजातंत्र की राजनीति और चुनाव किस प्रकार से हो रहे है, इसका सजग उदाहरण इस उपन्यास में दिया गया है। लेखक का यह चिंतन किसी सफल मालती के लिए नही अपितु जग्गीबाबू जैसे व्यक्ति के सामान्य परिवारवालों के लिए है। साथ ही पार्टियों के सामने देश तथा जनता किस प्रकार पीसी जाती है इसका चिंतन लेखक ने किया है। भारतीय प्रजातंत्र के चुनाव जनता को मध्य रखकर ही होने चाहिए लेकिन चुनाव में सामान्य जनता कितनी निचोडी जाती है यह कोई पूछता भी नही। भारतीय संविधान का कहता है कि, भारत धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है। चुनाव के समय में कहां जाती है इनकी धर्मनिरपेक्षता। सभी पार्टिया जाति और धर्म के कान्धे पर बंदूक रखकर ही अपनी जीत का निशाना लगाती है।

संदर्भ :

०१) कमलेश्वर : काली आंधी, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली तृतीय संस्करण १९७८ पृष्ठ क्र. १६।
०२) कमलेश्वर : काली आंधी, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली तृतीय संस्करण १९७८ पृष्ठ क्र. १०।
०३) कमलेश्वर : काली आंधी, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली तृतीय संस्करण १९७८ पृष्ठ क्र. १०।
०४) कमलेश्वर :काली आंधी, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली तृतीय संस्करण १९७८ पृष्ठ क्र. १०।
०५) कमलेश्वर : काली आंधी, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली तृतीय संस्करण १९७८ पृष्ठ क्र. १०।
०६) कमलेश्वर : काली आंधी, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली तृतीय संस्करण १९७८ पृष्ठ क्र. २१।
०७) कमलेश्वर : काली आंधी, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली तृतीय संस्करण १९७८ पृष्ठ क्र. ७५।
०८) कमलेश्वर : काली आंधी, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली तृतीय संस्करण १९७८ पृष्ठ क्र. ४३।
०९) कमलेश्वर : काली आंधी, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली तृतीय संस्करण १९७८ पृष्ठ क्र. १३२।
१०) अमरप्रसाद जायस्वाल : हिंदी लघु उपन्यास, विद्या विहार गांधीनगर कानपुर १ स. १९८४।
११) रामदरश मिश्र : हिंदी उपन्यास एक अंतर्यात्रा, राजकमल प्रकाशन १स. १९६८।
१२) सुरेश सिन्हा : हिंदी उपन्यास शिल्पा और प्रवृत्तियाँ, लखनउ प्रकाशन १९९४।